ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 205-208

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

वैश्वीकरण और भारतीय समाज

1. डॉ0 राजेश त्रिपाठी
2. अमित कुमार सिंह

1. एसो0 प्रोफेसर, 2. शोध अध्येता– समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (म0प्र0) भारत

Received-04.06.2023, Revised-10.06.2023, Accepted-15.06.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण संपूर्ण विश्व के समस्त देशों का अपनी सीमाओं को पार कर आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में परस्पर सहयोग हेतु एक क्षेत्र के नीचे आ जाने की प्रक्रिया को कहते हैं। भूमंडलीकरण वस्तुतः एक प्रवाह है जो कई रूपों में हमें दिखाई पड़ता है जैसे विश्व के एक हिस्सें से विचारों या संस्कृति का विश्व के दूसरे हिस्सों में पहुंच जाना, पूंजी का एक से ज्यादा जगहों पर अबाध प्रवाह, वस्तुओं का एक देश से अन्य देशों में पहुंचना,आजीविका एवं बेहतर व्यापार की तलाश में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लोगों की आवाजाही, भूमंडलीकरण के कुछ उदाहरण हैं। आज वैश्वीकरण अपनी पूरी सक्रियता के साथ पूरे विश्व में विस्तारित होता जा रहा है और इसी कारण आज पूरा विश्व एक छोटी सी दुनिया में सिमटकर आ गया है। वास्तव में भूमंडलीकरण का सिलसिला 15 वीं शताब्दी में भौगोलिक खोजों के साथ शुरू हुआ पर वर्तमान में हम जिस वैश्वीकरण की चर्चा कर रहे हैं। वह दरअसल द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अस्तित्व में आया। वैश्वीकरण की प्रक्रिया हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन को भी प्रभावित करता है। जहां वैश्वीकरण लोगों को एक दूसरे के निकट लाता है वही उनमें तनाव भी पैदा करता है, स्थानीय संस्कृति और बाजार को वैश्विक संस्कृति तथा बाजार का भय बराबर बना रहता है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया भारतीय समाज में अनेक संरचनात्मक और प्रकार्यात्मक परिवर्तन लेकर आया है। इससे भारतीय समुदायों की संस्कार, परंपराएं और मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव विवाह, परिवार, नातेदारी एवं जाति प्रथा आदि पर देखा जा सकता है साथ ही इसने भारतीय लोगों के जीवन शैली, संस्कृति, रुचि, फैशन, प्राथमिकता इत्यादि पर व्यापक प्रभाव डाला है। वैश्वीकरण एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है और इससे हमें अतीत में ढेरों अवसरों पर लाभ मिले हैं और आज भी इसके फायदे मिल रहे हैं। सवाल यह नहीं है कि गरीबों, वृद्धों, महिलाओं और वंचित तबकों को भी वैश्वीकरण से लाभ मिलता है या नहीं, बल्कि यह है कि उन्हें निष्पक्ष भागीदारी और अवसर उपलब्ध होते हैं या नहीं। वैश्वीकरण का तार्किक रूप से पक्ष लेने योग्य है, लेकिन साथ ही इसमं और सुधार की भी आवश्यकता है।***

कुंजीभूत शब्द– वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आजीविका, आवाजाही, सक्रियता, विस्तारित, परिवार।

भूमंडलीकरण दो शब्दों भू और मंडलीकरण से मिलकर बना है, भू का अर्थ है, भूमि एवं मंडलीकरण का अर्थ होता है समाहित करना अर्थात संपूर्ण विश्व को एक परिवार में समाने की या विश्व के समस्त देशों का अपनी सीमाओं को पार कर आर्थिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में इनमें से किसी भी क्षेत्र में परस्पर सहयोग हेतु एक क्षेत्र के नीचे आ जाने की प्रक्रिया को ही भूमंडलीकरण कहते हैं। भूमंडलीकरण वस्तुतः एक प्रवाह है, जो कई रूपों में हमें दिखाई पड़ता है– जैसे : विश्व के एक हिस्से से विचारों का विश्व के दूसरे हिस्सों में पहुंच जाना, वस्तु एक से ज्यादा जगहों पर आना और जाना एक देश से अन्य देशों में पहुंचना। आजीविका एवं बेहतर व्यापार की तलाश में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लोगों की आवाजाही भूमंडलीकरण के उदाहरण हैं। यह प्रवाह हमें बताते हैं कि वित्त एवं प्रौद्योगिकी की कोई राष्ट्रीय पहचान नहीं होती आज वैश्वीकरण अपनी पूरी सक्रियता के साथ पूरे विश्व में विस्तारित होता जा रहा है और इसी के कारण आज पूरा विश्व एक छोटी सी दुनिया में सिमटकर आ गया है। आधुनिक वैश्वीकरण पिछले 25 वर्षों में तीव्र हुआ है। जिसमें संचार साधनों में वृद्धि, सूचना तकनीक और आवागमन के साधनों ने दूरियों को कम करने का कार्य किया है। देखते ही देखते एक जगह का उत्पादन दूसरी जगह पहुंच जाता है, सेटेलाइट व्यवस्था और संचार व्यवस्था दुनिया भर के लोगों के भी सामाजिक संबंधों को गहरा और घनिष्ट कर रही है।

वैश्वीकरण एक अंतरराष्ट्रीय आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सूत्र में बांधने वाला ही नहीं है, यह सब तो वैश्वीकरण की प्रक्रिया करती ही है पर इससे आगे वैश्वीकरण हमारे स्थानीय दिन–प्रतिदिन के जीवन को भी प्रभावित कर रहा है। जहां वैश्वीकरण लोगों को एक दूसरे के निकट लाता है वही उनमें तनाव भी पैदा करता है स्थानीय संस्कृति और बाजार को वैश्विक संस्कृति और बाजार का भय बराबर बना रहता है। वैश्वीकरण की तीव्र प्रक्रिया से जो मौलिक परिवर्तन हो रहा है वह परिवर्तन उस व्यवस्था के मूल्यों परंपराओं एवं रीति–रिवाजों के प्रति सम्मान का भाव रखता है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया भारतीय समाज में अनेक संरचनात्मक प्रकार्यात्मक परिवर्तन लेकर आया है। समुदायों की अपने संस्कार परंपराएं और मूल्य भी परिवर्तित हो रहे हैं इस प्रक्रिया ने न सिर्फ भारतीय समाज को विश्व के अन्य समाजों से जुड़ा है बल्कि इसने विश्व नागरिकता की भावना को बल प्रदान कर राष्ट्र राज्य की सीमाओं को समाप्त कर मानवता पर बल दिया है। वैश्वीकरण के फलस्वरूप उद्योग धंधों के साथ–साथ कृषि उत्पादन में भी वृद्धि हुई है, इससे राष्ट्रीय एवं लोगों की प्रति व्यक्ति आय में सुधार हुआ है। परिणाम स्वरूप देश में निर्धनता अनुपात में धीरे–धीरे गिरावट आ रही है। आज परिवहन एवं संचार के साधनों ने विभिन्न देशों की दूरियों को बहुत कम कर दिया है। आज देश में शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा में सुधार हो रहा है। वैश्वीकरण के कारण भारतीय घरेलू उद्योगपतियों को विदेशी प्रतियोगिताओं का सामना करना पड़ा है जिससे उनकी उपयोगिता क्षमता में वृद्धि हुई है। परिणाम स्वरूप उत्पादकता और कार्यकुशलता में भी वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण का लाभ कृषि क्षेत्र में भी पहुंच रहा है। कृषि क्षेत्र में तकनीकों के द्वारा खाद्यान्नों का रिकॉर्ड तौर पर उत्पादन हो रहा है, प्रतिकूल मौसम की परिस्थिति के बावजूद भी

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

खाद्यान्नों का उत्पादन स्तर निरंतर बढ़ रहा है। देश की आवश्यकता से अधिक अनाजों का निर्यात भी किया जा रहा है। खुली अर्थव्यवस्था उपभोक्ताओं को विविध प्रकार की वस्तुएं उपलब्ध करा रही है। भारत अपने उत्पादन का विस्तार कर अपने नागरिकों के बेहतर जीवन सुनिश्चित कर रहा है। आवागमन के तीव्रतर साधनों, संप्रेषण तथा सूचना प्रौद्योगिकी ने संसार को एक वैश्विक गांव का स्वरूप दे दिया है। जिसके परिणाम स्वरुप बीमारियों ने वैश्विक महामारी का स्वरूप ग्रहण कर लिया है ऐसी बीमारियां एक देश से दूसरे देश में फैलने का जोखिम बढ़ रहा है, जैसे– स्वाइन लू, बर्ड लू, जीका वायरस, कोविड–19 बीमारियां।

भारतीय शिक्षा पर वैश्वीकरण का प्रभाव– वैश्वीकरण ने भारत में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का माहौल बनाया है इस कारण शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति आई है। शिक्षा तक पहुंच, शैक्षिक सूचनाओं की उपलब्धता, व्यवसायिक शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा का प्रसार, प्रौद्योगिकी शिक्षा का प्रसार, ऑनलाइन तथा डिजिटल शिक्षा की बढ़ती मांग इसका उदाहरण है। भारत में विश्वस्तरीय पाठ्यक्रम हो जाने से शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थी विश्व में कहीं भी रोजगार प्राप्त कर रहे हैं और प्रतिभा पलायन की नई समस्या को जन्म दिया है। दूसरी ओर भूमंडलीकरण के कारण आज शिक्षा एक व्यवसाय का स्वरूप ग्रहण कर ली है। एक तरफ वैश्वीकरण ने वेब पर सूचना के विस्फोट में सहायता की है जिसने लोगों में अधिक जागरूकता लाने में मदद की है। इसने देश में उच्च शिक्षा के विशेषज्ञता और संवर्धन की अधिक आवश्यकता को भी जन्म दिया है। दूसरी तरफ, निजी शिक्षा, कोचिंग क्लासेस और सशुल्क अध्ययन सामग्री के आगमन ने हैव्स और हैव–नोट्स के बीच एक अंतर पैदा कर दिया है। किसी व्यक्ति के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो गया है।

वैश्वीकरण का विवाह, परिवार, नातेदारी एवं जाति प्रथा पर प्रभाव– वैश्वीकरण ने विवाह परिवार नातेदारी एवं जाति प्रथा पर व्यापक प्रभाव डाला है अब विवाह एक धार्मिक संस्कार न रहकर सामाजिक उत्सव जैसा हो गया है। व्यवस्थित और परंपरागत विवाहों के स्थान पर प्रेम विवाहों की संख्या में वृद्धि, विवाहों की उम्र (विलंब विवाह), बहु विवाह के स्थान पर एक विवाह का प्रचलन, समलैंगिक विवाह, सहजीवन, विवाहों में कर्मकांडो का घटता प्रभाव, डेस्टिनेशन वेडिंग, डेटिंग, इत्यादि प्रभाव दिखाई पड़ रहे हैं। वित्तीय स्वतंत्रता के साथ बढ़ रहे प्रवासन ने संयुक्त परिवारों को एकल परिवार, परमाणु परिवार में विभाजित कर दिया है। व्यक्तिवाद के पश्चिमी प्रभाव के कारण युवाओं की आकांक्षा पैदा हुई है। जिससे व्यक्तिवादिता एवं स्वार्थवादिता बढ़ रही है। बच्चों पर परिवार का नियंत्रण धीरे–धीरे कम हो रहा है। नातेदारी व्यवस्था में जहां परिवारिक संबंधों पर बल दिया जाता था। वह अब धीरे–धीरे अन्य संबंधों की ओर उन्मुख हो रहे हैं। वैश्वीकरण में जाति प्रथा को भी प्रभावित किया है जाति बंधन अब धीरे–धीरे ढ़ीलें पड़ने लगे हैं अब विभिन्न जातियों के लोगों एक साथ मिलकर काम करना, भोजन करना, आपस में विवाह करना स्वीकार्य होने लगा है।

वैश्वीकरण का महिलाओं पर प्रभाव – कार्य के स्तर पर महिला–पुरुष में प्रतिस्पर्धा बढ़ी है। कुछ नौकरियों में तो महिलाओं ने अपनी पहचान बनाई है वो उच्च पदों पर पहुंच रही है और वेतन भी प्राप्त कर रही हैं। फिल्म, मॉडलिंग, टीवी सीरियल, रेडियो के चौनल, समाचार चौनलों, संगीत, सौंदर्य प्रतियोगिता आदि सभी जगहों पर महिलाएं छाई है। उल्लेखनीय है कि आज महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई हैं। परिवहन एवं संचार माध्यमों की तीव्र विकास से महिलाओं में ज्यादा जागरूकता आई है, परंतु दूसरी ओर वैश्वीकरण ने महिला सौंदर्य का बाजारीकरण किया है, प्रत्येक वस्तुओं के विज्ञापन में जिस प्रकार से उनके सौंदर्य का प्रयोग किया जा रहा है। उससे उनकी गरिमा दूषित हो रही है साथ ही उनकी विरुद्ध अपराधों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। ऐसी महिलाएं जो इन मापदंडों पर खरी नहीं उतरती उनमें कुंठा, हताशा और अवसाद का भाव उत्पन्न हुआ है। वस्तुओं के बाजार को दिखाते हुए इन विज्ञापनों ने महिलाओं को भी एक वस्तु बनाकर रख दिया है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप सांस्कृतिक मूल्यों में भी क्षरण हो रहा है पुरुष और महिला के संबंध भारतीय समाज में धीरे–धीरे विकृत हो रहे हैं तलाक की दर में वृद्धि हो रही है गर्भपात की संख्या बढ़ रही है समलैंगिक विवाहों की घटनाएं अब आम होने लगी है, एकल अभिभावक की घटनाएं अब आम होने लगी है

वैश्वीकरण का वृद्धों पर प्रभाव – एकल परिवार या परमाणु परिवारों के बढ़ने से संयुक्त परिवार द्वारा प्रदान की जाने वाली सामाजिक सुरक्षा और देखभाल में कमी आई है। इससे वृद्ध व्यक्तियों के आर्थिक, स्वास्थ्य और भावनात्मक कमजोर होने की संभावना बढ़ गई है। जिसके कारण तेजी से परिवर्तित हो रहे समाज में वृद्ध समायोजन नहीं कर पा रहे हैं और उनका जीवन अप्रासंगिक और महत्वहीन होने लगा है जिसके कारण वे बिछड़े निराशा अवसाद पूर्ण जीवन जी रहे हैं।

वैश्वीकरण का बच्चों पर प्रभाव – भूमंडलीकरण के कारण आज के बच्चे सूचना क्रांति के कारण विविध प्रकार की टीवी चौनल रेडियो सोशल साइट, ट्विटर, फेसबुक, इंस्टा आदि से जुड़ गए हैं, जिसके कारण वह पारिवारिक संस्कार और अनुशासन से धीरे–धीरे दूर होते जा रहे हैं, साथ ही कई प्रकार की आपराधिक कृत्यों, अश्लीलता से जुड़ी पोर्नसाइट ने शारीरिक एवं मानसिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। वह वक्त से पहले ही परिपक्व होते जा रहे हैं साथ ही इन्हें असल जिंदगी में अपनाने से अपराधीकरण की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है।

वैश्वीकरण का युवाओं पर प्रभाव – उभरती वयस्कता, काम, विवाह और पितृत्व जैसे वयस्क भूमिकाओं के लिए संक्रमण का समय दुनिया के अधिकांश हिस्सों के साथ भारत में भी हो रहा है, क्योंकि अर्थव्यवस्था में नौकरियों की तैयारी की आवश्यकता अत्यधिक तकनीकी और सूचना आधारित है, जो धीरे–धीरे बढ़ रही है। सत्ता और प्राधिकरण की पारंपरिक पदानुक्रम कमजोर हो रही है, वैश्वीकरण के दबाव में यह टूट रही है। वैश्वीकरण द्वारा युवाओं को विवाह और पितृत्व सहित अपने स्वयं के जीवन पर नियंत्रण विकसित करने के लिए मजबूर किया जाता है। उभरती वयस्कता का प्रसार पहचान के मुद्दों LGBTQ से संबंधित है। वैश्विक पहचान का विकास अब केवल प्रवासियों और जातीय अल्पसंख्यकों का हिस्सा नहीं है। आज विशेष रूप से युवा एक पहचान विकसित करते हैं जो उन्हें दुनिया भर की संस्कृति से संबंधित होने का एहसास दिलाता है, जिसमें घटनाओं, प्रथाओं, शैलियों और जानकारी के बारे में जागरूकता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

शामिल होती है जो वैश्विक संस्कृति का एक हिस्सा है। टेलीविजन और विशेष रूप से इंटरनेट जैसे मीडिया, जो दुनिया में किसी भी स्थान के साथ त्वरित संचार की अनुमति देता है, वैश्विक पहचान विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में शिक्षित युवाओं में एक अच्छी पहचान है, जो वैश्विक तेजी से विकसित तकनीकी दुनिया में एकीकृत होने के बावजूद, अपने व्यक्तिगत जीवन और पसंद के अनुसार पारंपरिक भारतीय मूल्यों के लिए गहरी जड़ें जमा सकते हैं, जैसे कि एक व्यवस्थित शादी के लिए वरीयता और अपने बुढ़ापें में माता–पिता की देखभाल करना तथा पारिवारिक मूल्यों का पालन करना।

वैश्वीकरण का आदिवासियों पर प्रभाव – वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत औद्योगिक एवं विकासात्मक परियोजनाओं के लिए जंगल नष्ट किए जा रहे हैं। इससे आदिवासियों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन प्रभावित हो रहा है। साथ ही पर्यावरण असंतुलन की नई समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है वैश्वीकरण का प्रत्यक्ष प्रभाव जनजाति लोगों को गरीबी, कर्ज और बेरोजगारी के रूप में देखने को मिल रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र में रोजगार के कम होते अवसरों, राज्य की लोक कल्याणकारी के रूप में घटती भूमिका का प्रभाव भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ रहा है।

भूमंडलीकरण का मनोवैज्ञानिक प्रभाव – वैश्वीकरण के दौर में समाज में प्रतिस्पर्धा को तीव्र किया है, प्रतिस्पर्धा से उत्पन्न तनाव, मानसिक और शारीरिक थकान, काम के लंबे घंटे,स्वास्थ्य के लिए तो हॉनिकारक है ही, साथ ही सामाजिक संबंधों के लिए भी घातक सिद्ध हो रहे हैं। जिसने कई मनोविकारों को भी जन्म दिया है। संयुक्त परिवार में बदलाव से संबंधों में स्वतंत्रता एवं समानता में वृद्धि, मुखिया के सत्ता का विकेंद्रीकरण, व्यक्तिवादीता में वृद्धि, जैसे कारक दिखाई पड़ते हैं। वही वैश्वीकरण ने धर्म के लिए विस्तार क्षेत्र में वृद्धि की है धर्म का बाजारीकरण बढ़ गया है। सूचना क्रांति की पश्चिमी शैली ने उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया है इसने राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में विकृतियां पैदा की है लोगों की रुचिओं को बाजार के अनुसार मोड़ा है। इस तरह पश्चिमी शैली का उपभोक्तावाद संपन्न तबकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया है। वंचित तबका इसके स्वप्न को और पूरा करना चाहता है, इसके लिए वह गलत रास्तों को अपनाने से भी पीछे नहीं हटता। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में सूचना संचार टेक्नोलॉजी की प्रगति ने उपभोक्तावाद व भ्रष्ट संस्कृति को बढ़ावा दिया है। टीवी पर धार्मिक सीरियलों को दिखाकर, इंटरनेट पर ज्योतिष उपलब्ध कराकर सामंती संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है। टीवी पर कार्यक्रमों के प्रायोजन और उन में दिखाए गए विज्ञापन पर अंतर्राष्ट्रीय कंपनियां हावी है। इन सभी लोकप्रिय सीरियलों और फिल्मों में बहुत ही धनी लोगों की जिंदगीयों को दिखाया जा रहा है। सुबह से शाम तक असभ्य, अदृश्य छिछोरापन, सस्ती, काल्पनिक कहानियां, अंधविश्वास, भूत और भविष्य वाली कहानियों को दिखाया जा रहा है, जिसका प्रभाव वयस्कों और खासकर के बच्चों के मन में उपभोक्तावादी संस्कृति को और गहरा बैठा रहा है।

मैकडॉनडलाइजेशन– एक शब्द जो रोजमर्रा के जीवन के नियमित कार्यों के बढ़ते युक्तिकरण को दर्शाता है। यह तब प्रकट होता है जब कोई संस्कृति फास्ट–फूड, रेस्तरां की विशेषताओं को अपनाती है। मैकडॉनलाइजेशन, तर्कसंगतकरण का एक अवधारणात्मककरण है,या पारंपरिक से विचार के तर्कसंगत तरीकों और वैज्ञानिक प्रबंधन के लिए भारतीय समाज में भी आगे बढ़ रहा है।

वॉलमार्टाइजेशन– बड़े–बॉक्स डिपार्टमेंट स्टोर वॉलमार्ट के आकार, प्रभाव और शक्ति के माध्यम से क्षेत्रीय और वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में गहरा बदलाव का जिक्र वॉलमार्टाइजेशन कहलाता है। इसे बड़े व्यवसायों के उदय के साथ देखा जा सकता है जिन्होंने हमारे भारतीय समाज में छोटे पारंपरिक व्यवसायों को लगभग मार दिया है।

भूमंडलीकरण का सांस्कृतिक प्रभाव– भारतीय समाज व्यवस्था का आधार उसकी मूल्यवान संस्कृति है, विश्वास परंपराओं और मूल्यों के संग्रह को भारतीय संस्कृति में महत्व दिया जाता है। वर्तमान में वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर समग्र प्रभाव देखा जा रहा है। इंटरनेट, केबल टीवी और सेटेलाइट ने सांस्कृतिक दूरियां समाप्त कर दी हैं। हमारे खान–पान, हमारे जीवन मूल्यों और सोचने समझने के तरीकों में भारी बदलाव आ गया है। वैश्वीकरण पूरे विश्व में एक समान जीवन शैली के विकास को बढ़ावा दिया है इसका प्रभाव भारतीय समाज के सांस्कृतिक विशेषताओं पर पड़ने वाले प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है। वैश्वीकरण ने भारतीय परिधान को एक नई पहचान दिलाई है जहां भारत में खादी के कुर्ते सिल्क और रेशमी परिधान विश्व बाजार में अपनी पहचान बना रहे हैं। वहीं पश्चिमी फैशन भारत में आ रहा है पारंपरिक भारतीय पोशाक विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में पश्चिमी कपड़े से विस्थापित हो रहे हैं। महिलाओं के लिए पारंपरिक भारतीय कपड़े साड़ी, सूट आदि हैं और पुरुषों के लिए, पारंपरिक कपड़े धोती, कुर्ता हैं। हिंदू विवाहित महिलाओं ने भी लाल बिंदी और सिंदूर का श्रंगार किया, लेकिन अब यह कोई मजबूरी नहीं है, बल्कि, इंडो–वेस्टर्न कपड़े, वेस्टर्न और सब कॉन्टिनेंटल फैशन का यूजन चलन में है। भारतीय लड़कियों में जींस, टी–शर्ट, मिनी स्कर्ट पहनना आम हो गया है। भारतीय व्यंजनों में मसाला डोसा दुनिया भर में सबसे लोकप्रिय व्यंजनों में से एक है। भारतीय मसाले और जड़ी–बूटियाँ व्यापार की सबसे अधिक वैश्विक मांग वाली वस्तुओं में से एक हैं। पिज्जा, बर्गर, चीनी खाद्य पदार्थ और अन्य पश्चिमी खाद्य पदार्थ भारत में काफी लोकप्रिय हो गए हैं।

भारत के संगीत में धार्मिक, लोक, लोकप्रिय, पॉप, और शास्त्रीय संगीत की कई किस्में शामिल हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत को दुनिया भर में पहचान मिली है, लेकिन हाल ही में, पश्चिमी संगीत भी हमारे देश में बहुत लोकप्रिय हो रहा है। पश्चिमी संगीत के साथ–साथ भारतीय संगीत को संगीतकारों के बीच प्रोत्साहित किया जाता है। अधिकतर भारतीय नृत्य शो विश्व स्तर पर आयोजित किए जाते हैं। भरतनाट्यम सीखने के लिए उत्सुक विदेशियों की संख्या बढ़ रही है। जैज, हिप हॉप, सालसा, बैले जैसे पश्चिमी नृत्य भारतीय युवाओं के बीच आम हो गए हैं। दुनिया भर के समाचार, संगीत, फिल्में, वीडियो तक भारतीय लोगों की पहुंच में है। विदेशी मीडिया घरानों ने भारत में अपनी उपस्थिति बढ़ाई है, भारत हॉलीवुड फिल्मों के वैश्विक लॉन्च का हिस्सा है। योग की बढ़ती लोकप्रियता ने भारतीय संस्कृति के मूल तत्व को विश्व के 150 से अधिक देशों में प्रसारित किया है, संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

की के रूप में मनाने कि यह योजना वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति की उपस्थिति दर्ज करा रही है। भारतीय दर्शन के परिचय की धारा विवेकानंद से आरंभ हुई अब तक स्टीव जॉब्स जैसे विद्वान भी इसके प्रति कृतज्ञता जाहिर कर चुके हैं। आयुर्वेद जो भारतीय संस्कृति का मूल तत्व था धीरे–धीरे विश्व में अपनी पहचान बना रहा है। वैश्वीकरण की सबसे अधिक आलोचना आलोचनाओं में से एक यह है कि यह दुनिया भर में एक सजातीय संस्कृति बनाने की धमकी देता है जिसमें सभी बच्चे बड़े होते हैं जो नवीनतम पॉप संगीत स्टार की तरह बनना चाहते हैं, बिग मैक खाते हैं, डिज्नी वर्ल्ड में छुट्टियां मनाते हैं, और नीली जींस पहनते हैं, और महंगी बाइक का शौक रखते हैं। आज बाजार में तमाम ऐसी वस्तुएं खरीदी जाने लगी है जिनकी ना होने पर हमारे जीवन की गुणवत्ता में कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, पर इन महंगी ब्रांड की वस्तुओं को व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा को जोड़ा जा रहा है।

भूमंडलीकरण के कारण भारतीय संस्कृति के मूल्यों में गिरावट आ रही है क्योंकि पाश्चात्य संस्कृति और परंपरा हमारी भारतीय संस्ति में पैर पसार रही है। अभिवादन तथा अन्य सामान्य व्यवहार में पश्चिमी आचरण को प्रमुखता दी जा रही है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारत में अनेक सांस्कृतिक–धार्मिक समूह को खत्म करने का कार्य किया है। इसके विरोध में ये अधिक संगठित होकर वैश्वीकरण का विरोध करने लगे हैं। इस विरोध में अनेक अवसरों पर भारत में कट्टरतावाद और सामाजिक असहिष्णुता को बढ़ावा दिया है। प्रत्येक शिक्षित भारतीय यह मानता है कि भारत में अतीत या वर्तमान में कुछ भी अनुमोदित नहीं किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष और सुझाव – वैश्वीकरण एक सदियों पुरानी घटना है जो सदियों से चली आ रही है। अपनी बढ़ी हुई गति के कारण हम इन दिनों इसे बहुत गहराई से अनुभव कर सकते हैं। प्रौद्योगिकी और नई आर्थिक संरचनाओं की पैठ लोगों के बीच बढ़ती बातचीत के लिए अग्रणी है। जैसा कि अन्य बातों के कारण भारत पर इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। वैश्वीकरण में प्रतियोगिता, दक्षता, बेहतर उत्पादकता और प्रौद्योगिकी के जरिए प्रगति की अपार संभावनाएं हैं, किंतु अभी तक वैश्वीकरण का भारत में असमान प्रभाव दिखाई पड़ा है। भारत में वैश्वीकरण का एक बुरा प्रभाव यह भी पड़ा है कि कल्याणकारी योजनाओं में सरकारी खर्चों में ठहराव सा आ गया है। इसने स्वास्थ्य सेवाओं को पूंजीवादी व्यवस्था की ओर धकेलना प्रारंभ कर दिया है। प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चतम स्तर तक की शिक्षा व्यवस्था पूंजीपतियों और साम्राज्यवादी के हाथों में जा रही है, जिससे शिक्षा का निजीकरण बढ़ता जा रहा है।

अंतराष्ट्रीय संगठन जैसे विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा संयुक्त राज्य अमेरिका,यूरोप इत्यादि जैसी महाशक्तियां निर्णयों को अपनाने के लिए दबाव डाल सकते है। वैश्वीकरण को पारिस्थितिक प्रणाली के लिए खतरे के रूप में भी देखा जाने लगा है। अधिकांश विकासशील और विकसित राष्ट्र प्रा.तिक पर्यावरण के संरक्षण के लिए बहुत कम ध्यान देते हैं। हाल के दशकों में वैश्विक तापन (ग्लोबल वार्मिंग) की दर बहुत अधिक रहीं है। इसके परिणामस्वरूप, महासागरों के औसत तापमान में वृद्धि हुई हैं, ग्लेशियरों में गिरावट आई है, हिमपात अधिक हुए है और इस प्रकार जलवायु परिवर्तन तीव्र हुआ है। पिछले 50 वर्षों में वातावरण में कार्बन डाइऑक्साउड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड इत्यादि हरित गृह गैसों का सांद्रण भी तीव्र गति से बढ़ा है।

वैश्वीकरण का क्या अच्छा और बुरा प्रभाव पड़ा है यह विश्लेषण के आधार पर अंतिम तौर पर कुछ कहना कठिन है। वैश्वीकरण एक ऐसा विचार बन चुका है कि आप और देश चाहे या ना चाहे उसका सभी देशों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्.तिक और राजनीतिक जीवन पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव दिखाई पड़ रहा है। विश्व के आर्थिक एकीकरण के साथ वैश्वीकरण ने सामाजिक सांस्कृतिक राजनीतिक एकीकरण पर बल दिया है। इसने समाज के हर एक वर्ग को प्रभावित करने की कोशिश की है भले ही वह प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव से गोचर हो रहे हो, पर यह सच है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया से समाज का एक तबका लाभान्वित हुआ है। दूसरी तरफ समाज के शोषित दलित वंचित प्रताड़ित और हाशिए पर रह रहे लोगों पर इसका सकारात्मक से अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। बावजूद इसके वैश्वीकरण का तार्किक रूप से पक्ष लेने योग्य है, लेकिन साथ ही इसमें सुधार की भी आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीनिवास एम० एन०, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, 2019.
2. भारत का भूमंडलीकरण, अभय कुमार दूबे।
3. सिंह योगेन्द्र, भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण, 2006.
4. आहूजा रामः भारतीय सामाजिक व्यवस्था, 2005.
5. सिंह जे०पी०, आधुनिक भारत का समाज, 2019.
6. दोषी एस० एल० और जैन पी० सी०: भारतीय समाज संरचना और परिवर्तन, 2005.
7. पाण्डे गोविन्द चन्द्र, भारतीय समाज तात्विक और ऐतिहासिक विवेचन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1993.
8. दुबे श्यामाचरण–परंपरा इतिहास बोध और संस्कृति, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2008.
9. भारतीय समाज, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली 1990.
10. दैनिक समाचार पत्र।

*****